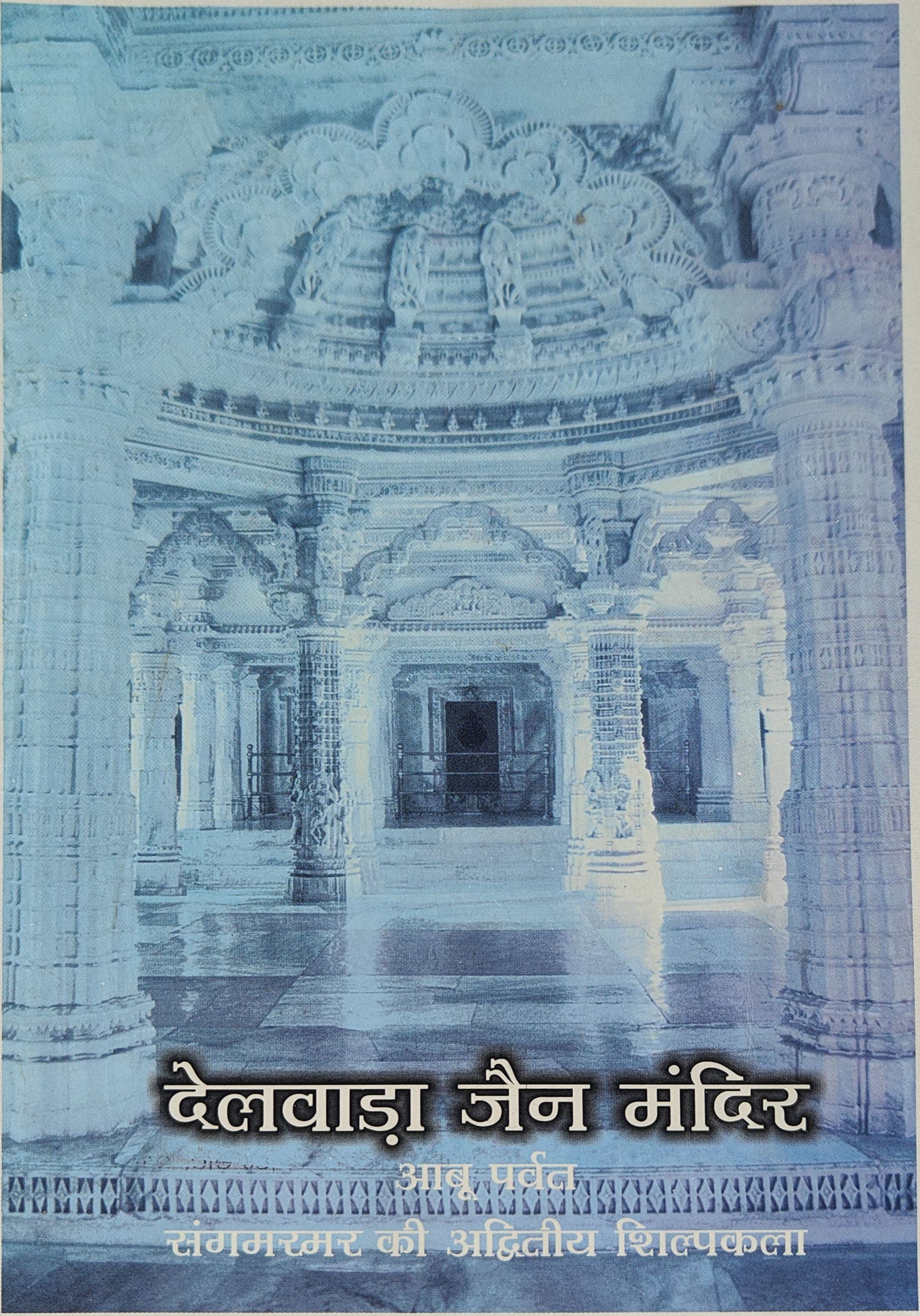


देलवाड़ा जैन मंदिर

आबू पर्वत

संगमरमर की अद्वितीय शिल्पकला

मंदिर प्रवेश के नियम

- मंदिर प्रवेश निशुल्क है ।
- दर्शकों के लिए मंदिर अवलोकन का समय दोपहर 12 से सायं 6 बजे के मध्य का ही है। 12 बजे से पूर्व का समय पूजा–अर्चना–उपासना के लिए सुरक्षित है ।
- मंदिर में किसी भी प्रकार का शस्त्र, खान–पान की वस्तुएं, जूते–चप्पल, छड़ी, रेडियों, केमरा, चमड़े की वस्तु, थैला आदि सामान ले जाना, धूम्रपान करना, मुंह में कोई पदार्थ चबाना वर्जित है ।
- दर्शकों को चाहिये कि वर्जित वस्तुओं को प्रवेश–द्वार स्थित "क्लोक रूम" में टोकन लेकर सुरक्षित रखें।
- मासिक धर्म महिलाएं मंदिर में प्रवेश नहीं करें ।
- मंदिर में किसी भी प्रकार की फोटोग्राफी पूर्णतया वर्जित है।
- मंदिर में किसी भी कलाकृति को न छुएं तथा स्तम्भों का सहारा न लें।
- मंदिर में शांति तथा व्यवस्था बनाए रखें।

यह मंदिर हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। आध्यात्मिकता और कला की अपूर्व निधि है। किसी भी प्रकार की क्षति न पहुंचाना हम सभी का दायित्व है।

इन मंदिरों का प्रबन्ध एक ट्रस्ट

सेठ कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी, सिरोही (राज.) द्वारा किया जाता है।



देलवाड़ा जैन श्वेताम्बर मंदिर, आबू पर्वत

अर्बुदाचल की अनिवर्चनीय सुषमा में विश्व की अनुपम शिल्पकला की शाश्वत थाती को देलवाड़ा जैन मंदिरों के निर्माताओं, सूत्रधारों एवं शिल्पियों ने संजोकर रखा हैं। उज्जवल धवल संगमरमर से निर्मित यहां के मंदिर एक ओर शिल्पियों की अद्‌भुत कारीगरी तथा दूसरी ओर वीतराग जिन मूर्तियों की सुन्दरता और वैभवता से आध्यात्मिक वातावरण में आगन्तुक को अलौकिक सौन्दर्य और शांत–रस में अवगाहन कराते हुए नयनों के लिए अपूर्व रूपागार खोल देते हैं। इन मंदिरों में जैन संस्कृति के प्रत्यक्ष दर्शन के साथ–साथ उस युग की हिन्दू संस्कृति, नृत्य–नाट्य कला के अद्‌भुत एवं चित्ताकर्षक शिल्प–चित्र उत्कीर्ण हैं। शिल्प–सौन्दर्य की सूक्ष्मता, कोमलता, अलंकरण की विशिष्टता और गुम्बजों की छतों पर स्फटिक बिन्दुओं की भांति झूमते कलात्मक पिंड, मेहराबों का बारीक अलंकरण आदि अलौकिक आनन्द की अनुभूति प्रदान करते हैं। शिलापट्टों पर उत्कीर्ण चित्रों, विभिन्न पशु–पक्षियों, वृक्षों, लताओं, पुष्पों आदि की आकृतियाँ स्वर्गीय सौन्दर्य के स्वप्न हैं। यहां की वास्तुकला एवं शिल्प–कौशल अद्वितीय है जिसकी मिसाल विश्व में अन्यत्र नहीं मिलती ।

मंदिर का सादगी पूर्ण प्रवेश–द्वार दर्शकों को सौन्दर्य एवं मोहकता के दुर्लभ संसार में ले जाता है। यहां पाँच श्वेताम्बर जैन मंदिर हैं, जिनमें ''विमलवसहि'' तथा ''लूणवसहि'' के मंदिर अत्यन्त ही कलात्मक एवं विशिष्ट हैं। अन्य मंदिरों में महावीर स्वामी का मंदिर, पीतलहर मंदिर तथा पार्श्वनाथ के मंदिर हैं। इस परिसर में श्री कुन्थुनाथ स्वामी का दिगम्बर जैन मंदिर भी है।

मंदिर द्वार में प्रवेश करते ही बांई ओर तीन मंजिला भगवान पार्श्वनाथ का चौमुखा मंदिर दिखलाई पड़ता है। इस मंदिर को अन्त में देखा जाता है। रास्ते में सीधा आगे बढ़ने पर दाहिनी ओर मुख्य मंदिर में जाने की सीढ़ियां चढ़कर बांई ओर स्थित भगवान महावीर स्वामी का छोटा सा मंदिर आता है।

महावीर स्वामी का मंदिर

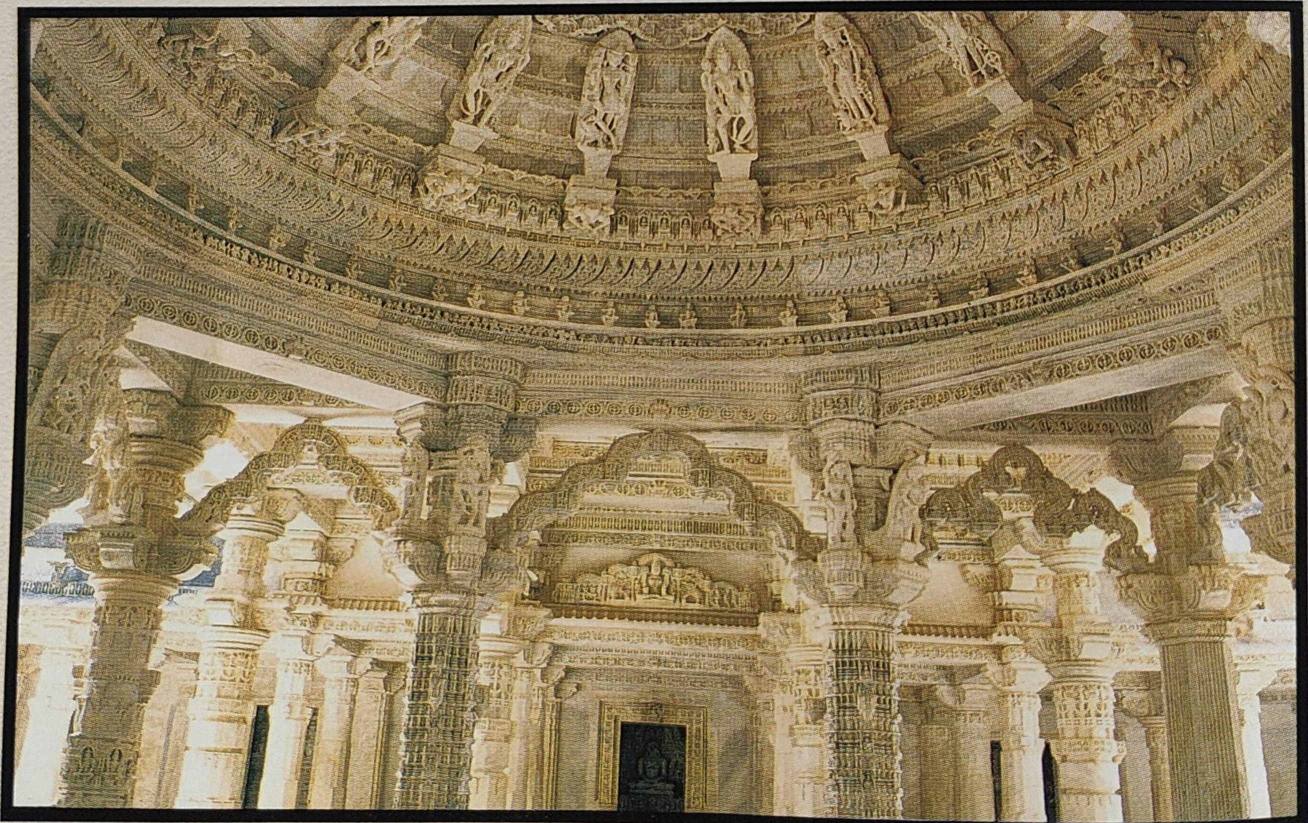
इस आधुनिकतम मंदिर का निर्माण सन् 1582 ई. में हुआ। यह सब मंदिरों से छोटा तथा बहुत ही सादा है। मंदिर में मूलनायक 24वें जैन तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी सहित 9 जिन बिम्ब हैं। मंदिर के बाहरी भाग की छतों पर वि.सं. 1821 (सन् 1764 ई.) में सिरोही के चित्रकारों द्वारा बनाये गये चित्र हैं। प्रथम छत में भगवान ऋषभदेव, अम्बाजी, महादेव, श्रीकृष्ण की आकृतियाँ तथा चारों ओर हाथी, ऊँट, वाद्य–वादक आदि चित्रित हैं। दूसरी छत पर आठ स्त्रियाँ ''घूमर'' नृत्य करती हुईं और आठ स्त्रियां विभिन्न प्रकार के वाद्य आदि लिए हुए अंकित हैं। तीसरी एवं चौथी छत के मध्य फूल बना हुआ है और चारों तरफ पक्षियों के चित्र हैं। पांचवीं छत पर एक बारात का दृश्य है। छठी छत पर गणेश, हनुमान, क्षेत्रपाल के चित्र तथा दीवार पर यमुना नदी के तट पर श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के वस्त्राहरण का दृश्य है। आयरिश की यह चित्रकारी धूमिल अवस्था में है।

विमलवसहि मंदिर

पूर्वकथा : इस मंदिर का निर्माण विमलशाह ने कराया। विमलशाह गुजरात के चालुक्य महाराजा भीमदेव प्रथम के मंत्री एवं सेनापति थे। इनके नेतृत्व में अनेक युद्ध हुए जिसमें सहस्त्रों प्राणियों का संहार हुआ। विमलशाह को आबू के समीप चन्द्रावती का प्रशासक नियुक्त किया गया। मानव संहार के पाप प्रायश्चित–स्वरूप जैनाचार्य श्री धर्मघोष सूरी ने आबू तीर्थ का उद्धार करने को कहा। विमलशाह अम्बिका देवी का उपासक था, अतः देवी की अराधना की । देवी उसकी भक्ति और पुण्य से प्रभावित होकर प्रकट हुई। विमलशाह ने एक पुत्र प्राप्ति का तथा दूसरा आबू पर्वत पर एक मंदिर बनाने का वरदान माँगा। देवी ने एक ही इच्छित वरदान माँगने के लिए कहा। विमल ने अपनी धर्म–पत्नि से विचार कर मंदिर बनाने का वर माँगा, यह सोचकर कि पुत्र कभी सपूत और कभी कपूत निकलते हैं, जिससे चिरकाल तक नाम अमर नहीं रह सकता। देवी ने मंदिर बनाने का वरदान दिया।

विमलशाह ने आबू पर्वत आकर स्थान पसन्द किया किन्तु स्थानीय ब्राह्मणों ने विरोध किया कि यह हिन्दुओं का तीर्थ–स्थल है, यहां पहले जैन मंदिर था ये सिद्ध करो। विमल ने पुनः अम्बिकादेवी की आराधना की। देवी ने स्वप्न में उसे बताया कि चम्पा के पेड़ के नीचे कुंकुम का स्वस्तिक दिखाई पड़े उस स्थल को खुदवाने से कार्य सिद्धि होगी । खुदाई करने पर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की अति प्राचीन मूर्ति निकली जिसे उसी स्थान पर स्थापित किया गया। ब्राह्मणों को जमीन की मुँह माँगी कीमत दी और मंदिर का कार्य प्रारम्भ किया।

मंदिर निर्माण : विमलवसहि का यह मंदिर सन् 1031 ई. में बनकर तैयार हुआ जिस पर उस समय 18 करोड़ 53 लाख रूपये की लागत आई। मंदिर निर्माण में 1500 शिल्पियों तथा 1200 श्रमिकों ने 14 वर्ष का समय लिया। शिल्पकार था बड़नगर (गुजरात) का निवासी ''कीर्तिधर''।

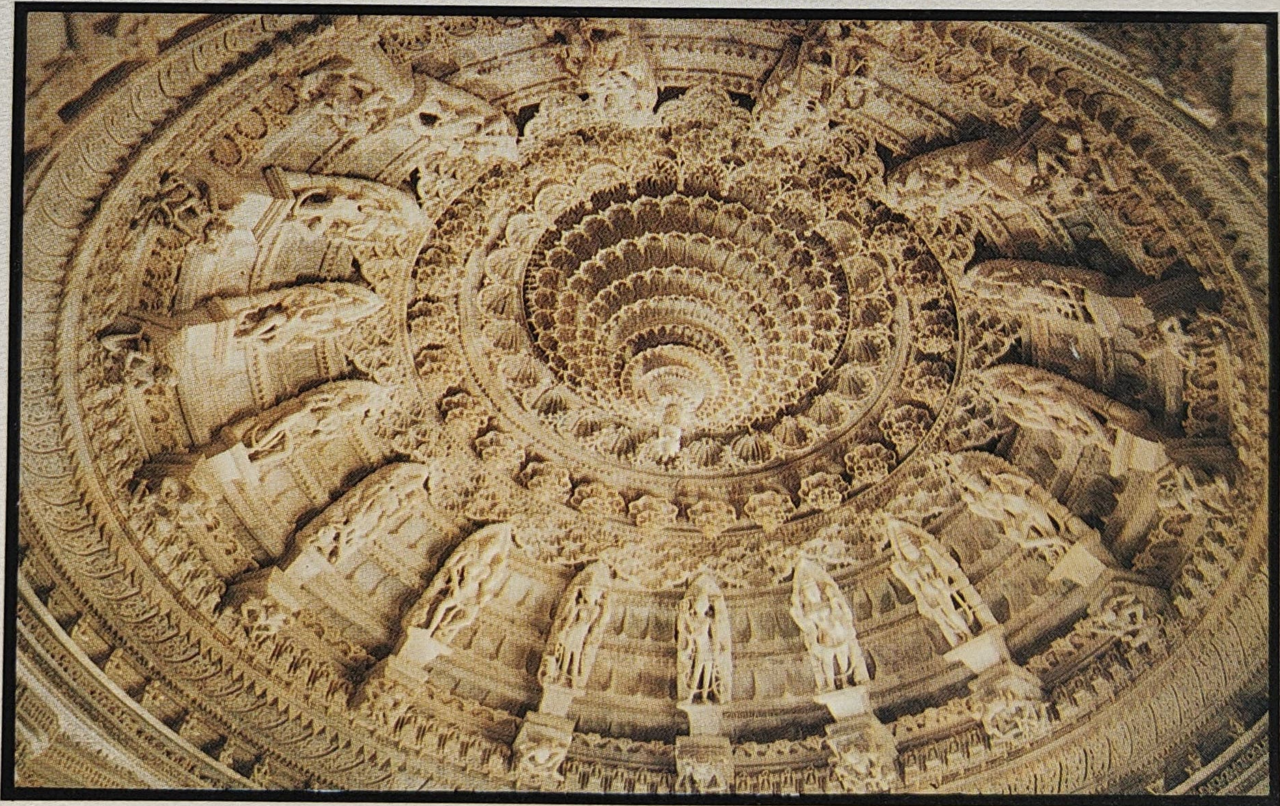


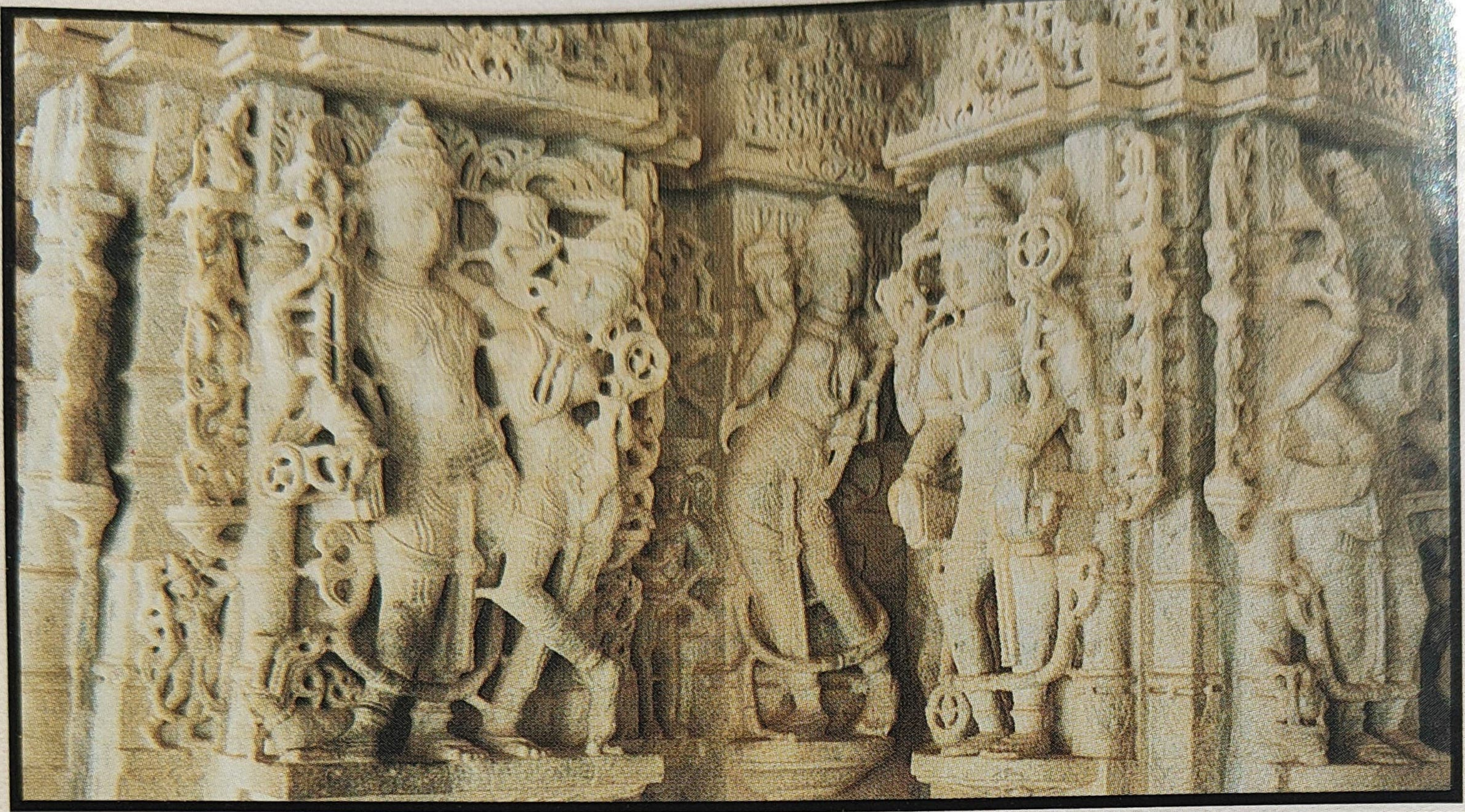
प्रयुक्त संगमरमर आबू रोड से लगभग 22 कि.मी. अम्बाजी नगर के निकट ''आरासूरी'' की पहाड़ियों से हाथियों पर रखकर लाया गया। पत्थर की कीमत दो करोड़ रू.। जमीन की कीमत 4 करोड़ 53 लाख रूपये। मंदिर की भूमि 140 फुट लम्बी और 90 फुट चौड़ी जिस पर चौकोर स्वर्ण मुद्रायें बिछाकर भूमि की कीमत ब्राह्मणों को अदा की गई।

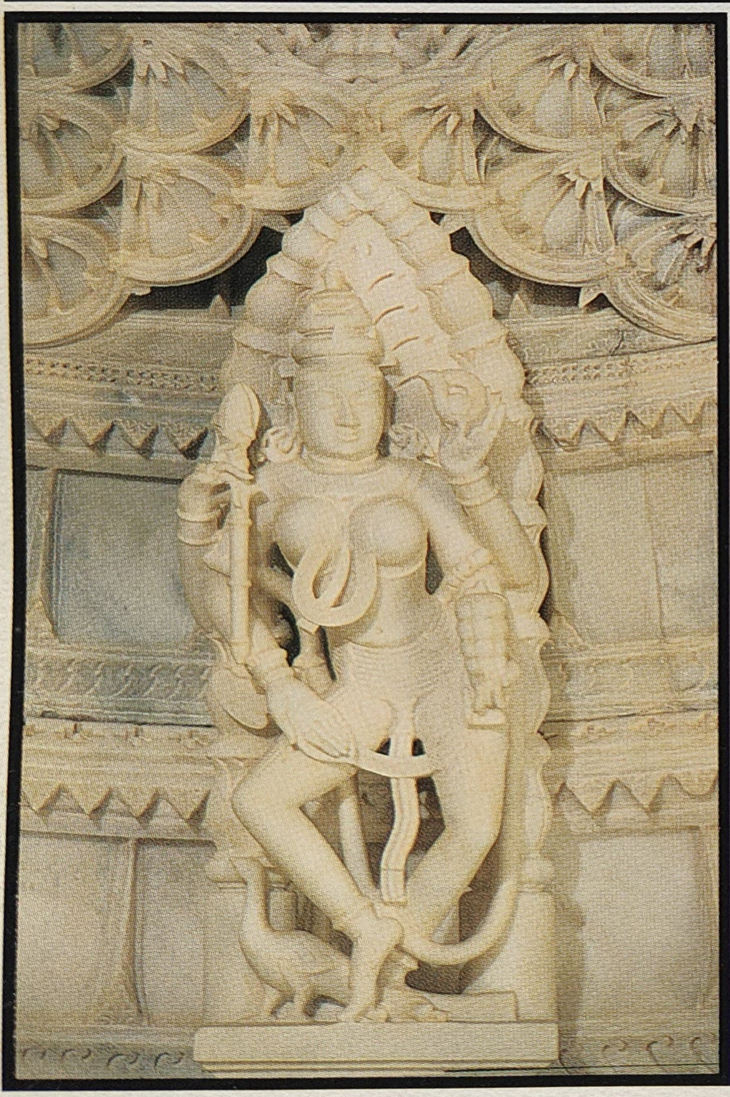
प्रतिष्ठा : मंदिर की प्रतिष्ठा जैन आचार्य वर्धमान सूरि के द्वारा सन् 1031 ई. में हुई जिसमें प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) की सफेद संगमरमर पत्थर से निर्मित परिकरयुक्त प्रतिमा स्थापित की गई।

जीर्णोद्धार : विमलशाह के वंशज पृथ्वीपाल ने संवत् 1204 से 1206 तक इस मंदिर की कई देहरियों का कार्य करवाया तथा अपने पूर्वजों की कीर्ति को चिरस्थाई करने हेतु इस मंदिर के सामने ही ''हस्तीशाला'' बनवाई जिसके द्वार के मुख्य भाग में घोड़े पर सवार विमलशाह की मूर्ति स्थापित कर संगमरमर पत्थर के 8 हाथी निर्मित कराये। तत्पश्चात दो हाथी संवत् 1237 में बने।

सन् 1311 ई. में दिल्ली के मुसलमान शासक अलाऊद्दीन खिलजी की सेना ने जालोर विजय से लौटते हुए मंदिर को क्षतिग्रस्त किया जिसका जीर्णोद्धार मंडोर (जोधपुर) निवासी बीजड़ और लालग नामक भाईयों ने किया। प्रतिष्ठा वि.सं. 1378 की ज्येष्ठ कृष्णा नवमी को आचार्य ज्ञानचन्द्र सूरि से करवाई। मंदिर में नवीनतम जीर्णोद्धार सन् 1950 से 1965 ई. तक तथा परिक्रमा में देहरी संख्या 18 से 27 तक नई बनवाई तथा साधारणतया अन्य मंदिरों का भी जीर्णोद्धार शिल्पी श्री अमृतलाल मूलशंकर त्रिवेदी के निर्देशन में 13.82 लाख रूपये की लागत से 4244 दिनों तक औसतन 75 कारीगरों द्वारा किया गया। इस विषयक शिलालेख देहरी संख्या 17 के दरवाजे पर तथा मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर लगे हुए हैं।









दृश्य रचना : मंदिर के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही सफेद संगमरमर के पाषाणों से निर्मित मंदिर की छतों, गुम्बजों, तोरणद्वारों आदि की अलंकृत नक्काशी, शिल्पकला की भव्यता और सुकोमलता की झलक दिखाई पड़ती है। प्रवेश द्वार के बांई ओर से प्रदक्षिणा प्रारम्भ होती है। प्रदक्षिणा में 57 देहरियाँ हैं, जिनमें विभिन्न जैन तीर्थंकरों की परिकर सहित सुन्दर मूर्तियां स्थापित हैं। प्रत्येक देहरी के नक्काशी–युक्त द्वार के बाहर दो–दो गुम्बज हैं जिनकी छतों पर उत्कीर्ण शिल्पकला नयनाभिराम है। विशेष ध्यान देने योग्य कतिपय का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

देहरी 1: नेमीनाथ भगवान की मूर्ति । इसके गुम्बजों में कमल पुष्प, पंक्ति–बद्ध सिंह, नर्तक–वादक

2 से 7 : विभिन्न पुष्पों की अलँकृत आकृतियाँ। पूजा की वस्तुएं, पुष्प–मालायें आदि हाथ में लिए जैन श्रावक–श्राविकायें। अलंकृत कमल, पक्षियों और वाद्य बजाते मनुष्यों की आकृतियाँ।

8 : जैन तीर्थंकर की समवसरण रचना जिसमें देवता, मनुष्य और पशु उपदेश श्रवण करते हुए।

9 : पद्मप्रभूजी–पंच कल्याणक का दृश्य। जैन तीर्थंकर के पंच–कल्याणक अर्थात्–शुभ महोत्सव, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति के दृश्य।

10. : जैन तीर्थंकर नेमीनाथ चरित्र का दृश्य। कृष्ण की जल–क्रीड़ा। नेमीनाथ की बारात, उनकी दीक्षा, केवल ज्ञान आदि की रचना।

11. : महारोहिणी (विद्या देवी) की 14 हाथ वाली मनोहर मूर्ति। कोने में गणपति।

12 : पंच कल्याणक का दृश्य।

13 : खिलता हुआ कमल पुष्प तथा आठ देवियों की मूर्तियाँ।

14 से 17 : जैन तीर्थंकर के पंच–कल्याणक एवं कमल पुष्पों की आकृतियाँ।

19 : इस नई देहरी के गुम्बज में नृत्याभिनय पुतलियों के सुन्दर गोलाकार पट्ट हैं और प्रत्येक के मध्य कमल पुष्प।

20 : प्रथम गुम्बज में गजलक्ष्मी तथा दूसरे गुम्बज में शंखेश्वरी देवी की सूक्ष्मतम मनोहर कृति।

22–23 के मध्य : आदीश्वर भगवान की प्राचीन श्यामवर्ण की विशाल और आकर्षक प्रतिमा स्थापित है। यह मूर्ति विमलशाह को अम्बिका माता के प्रसाद से विमलवसहि मंदिर के निर्माण (सन् 1031) के पूर्व भू–गर्भ से प्राप्त हुई जो अति प्राचीन मानी जाती है। इसका वर्णन उपर पूर्व में दिया जा चुका है। इस मंदिर के समवसरण में चौमुखी स्वरूप चार जिन बिम्ब, क्षेत्रपाल वालिनाथ एवं जैन आचार्य हीर विजयसूरि (सम्राट अकबर के उपदेशक) की पाषाण मूर्तियाँ है।

23 : अम्बिका माता की आकर्षक मूर्ति। इस मंदिर के निर्माता विमलशाह की आराध्य देवी।

32 : श्रीकृष्ण द्वारा कालिया नाग दमन का दृश्य। आस–पास सात नागिनें हाथ जोड़े खड़ी है। एक ओर कृष्ण पाताल लोक में शेष–नाग की शय्या पर शयन कर रहे हैं। दूसरी ओर कृष्ण, बलदेव और उनके साथी यमुना तीर पर गेंद–डंडा खेलते हुए।

38. : एक गुम्बज में 16 हाथ वाली सिंहवाहिनी विद्यादेवी की कलात्मक मूर्ति।

41 : इस देहरी में 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ की मूर्ति स्थापित है। गुम्बज में मूलनायक के बांई द्वार के ठीक सामने श्रीकृष्ण का होली खेलने का दृश्य।

42 : गुम्बज में चार मनोहर मूर्तियां–मयूरासन सरस्वती, गजवाहिनी लक्ष्मी, कमल पर

लक्ष्मी, गरूड़ पर शंखेश्वरी देवी। मूर्ति निर्माण की स्पष्टता, सूक्ष्मता, विशेषत हाथ–पांवों की अँगुलियों, नाखूनों की बनावट ध्यान देने योग्य है।

43 : मध्य में लक्ष्मीदेवी तथा आसपास हँस, मयूर पर आसनारूढ़ अन्य देवी–देवियाँ।

44: देहरी में नक्काशीदार तोरण व परिकर युक्त श्री वारिषेश प्रभु की मूर्ति। गुम्बज में कमल के फूल में 16 नर्तकियां अंकित हैं।

46–47–48: के गुम्बजों में 16 हाथ वाली क्रमशः देवी शीतला, हँसवाहिनी सरस्वती एवं पद्मावती की सुन्दर मूर्तियां।

49 : श्रीकृष्ण ने नरसिंह अवतार धारण कर दानव हिरयकश्यप का पेट चीरकर वध किया था, उसकी कमल पुष्प पर उभरी हुई आकृति।

50 : देहरी में परिकरयुक्त शान्तिनाथ भगवान की मूर्ति तथा गुम्बज में अभिषेक का दृश्य।

51 : गुम्बजों में बीस खण्डों का एक शिल्प–पट्ट है।

देहरीयों का अवलोकन कर मुख्य द्वार के पास गुम्बज में बांयें हाथ की ओर हाथियों की पंक्ति के ऊपर आद्रकुमार के हस्त प्रतिबोध का दृश्य। एक ओर नतमस्तक हाथी के बाजू में सिंह और मनुष्य का मल्लयुद्ध दिखाया गया है।

मंदिर के प्रवेश द्वार और रंग–मंडप के बीच, नीचे मध्य गुंबज में भरत–बाहुबली के युद्ध का दृश्य है जिसमें सुसज्जित सेनापति, सैनिक, हाथी घोड़े आदि अंकित हैं।

मध्य गुम्बज के दोनों ओर के गुम्बंजों के मध्य लटकते हुए कलात्मक झूमके एवं इर्द–गिर्द पूर्व दिशा की ओर हाथियों का समूह।

नीचे रंग–मंडप में प्रवेश करने के पूर्व दाहिने हाथ (उत्तर दिशा) की भमती के मध्य के गुम्बज में सरस्वती की, दक्षिण दिशा की ओर लक्ष्मी देवी तथा एक कोण के बीच में अम्बा देवी की सुन्दर मूर्तियां हैं।

रंग–मंडप : इस मंदिर का यह सर्वोत्तम कलात्मक भाग है। 12 अलंकृत स्तम्भों और कलात्मक सुन्दर तोरणों पर आश्रित बड़े गोल गुम्बज में हाथियों, अश्वों, हँसों, नर्तकों

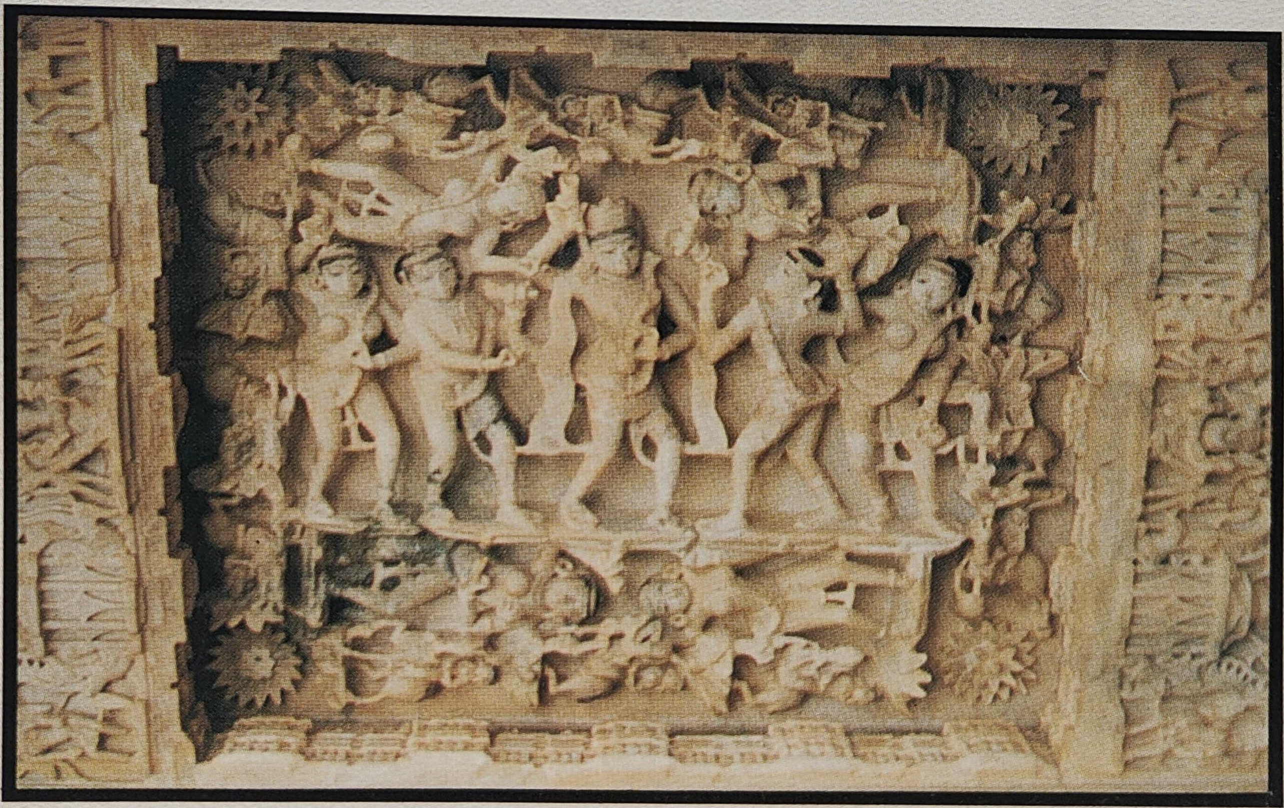


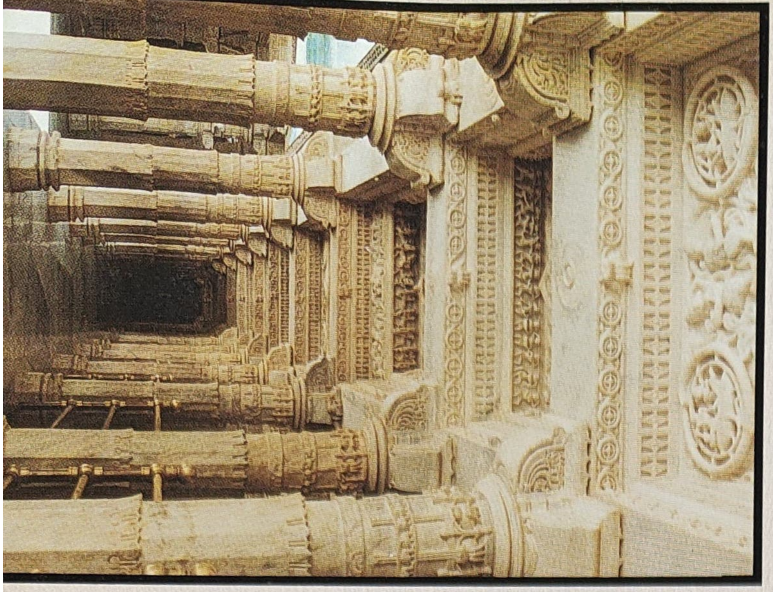
आदि की ग्यारह गोलाकार मालायें और केन्द्र में झूमकों के स्फटिक गुच्छे लटकते हुए हैं। प्रत्येक स्तम्भ के ऊपर भक्ति भाव से वाद्य बजाती हुई ललनायें और उसके ऊपरी भाग में भिन्न–भिन्न आयुध–शस्त्र और नाना प्रकार के वाहनों से सुशोभित 16 विद्या देवियों की खड़ी अवस्था में अत्यन्त ही प्रभावशाली एवं रमणीय मूर्तियां हैं।

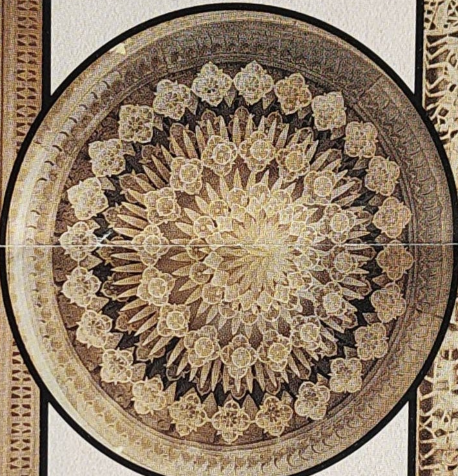
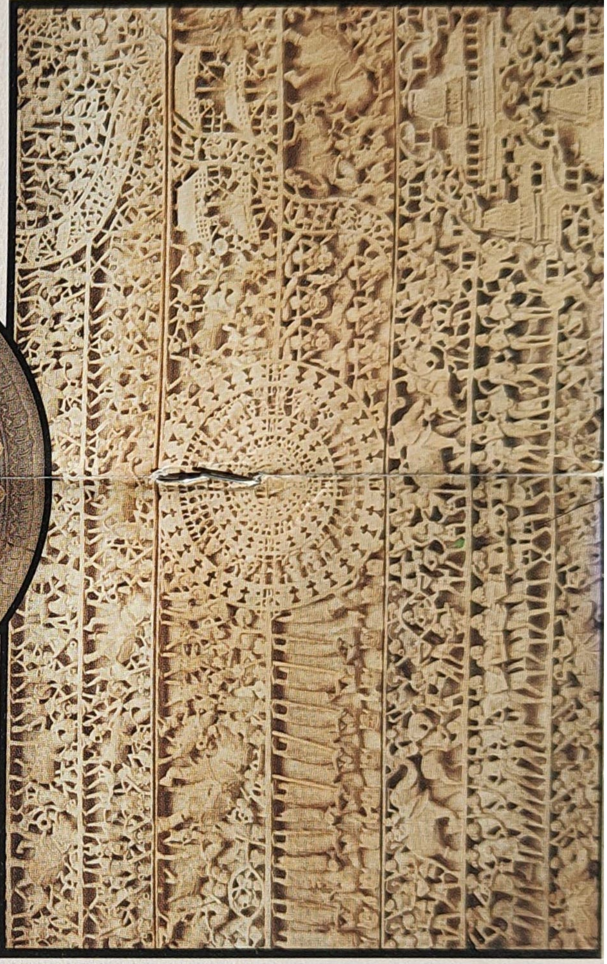
नवचौकी : रंग–मंडप से ऊपर की ओर नवचौकी में 9 समकोण आकृति वाली प्रत्येक अलँकृत छत में विभिन्न प्रकार की खूबसूरत खुदाई का कार्य है जिनमें जैन आचार्य, विनीत भाव में श्रावक पुष्प मालायें, पूजा की सामग्री लिए आदि दृश्य हैं। चहुँ ओर कल्पपृक्ष की लताओं का सुन्दर अँकन है। स्तंभों पर नृत्य–वादन की भाव–भंगिमाओं का शाश्वत शास्त्रीय रूप प्रदर्शित हैं। मंदिर के मुख्य दरवाजे के बाहर दोनों गोखड़ों में आदिनाथ भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ हैं।

गूढ़ –मण्डप : गूढ़ मण्डप का द्वार अति कलात्मक है। सादे गुम्बज के अंदरूनी भाग गर्भगृह में श्वेत संगमरमर पत्थर की अति वैभवशाली प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) की मूर्ति प्रतिष्ठित है। गुम्बज के दोनों बाजू में भगवान पार्श्वनाथ की दो मूर्तियाँ ध्यानावस्था में खड़ी हैं।

विमलवसहि की हस्तीशाला : विमलवसहि मंदिर के मुख्य द्वार के ठीक सामने हस्तीशाला है। जैसा कि ऊपर उल्लेखित है इसे विमलशाह के वंशज पृथ्वीपाल ने सन् 1147 ई. में बनवाया। इसके द्वार पर ही विमलशाह की घुड़सवार मूर्ति है जिसके एक हाथ में पूजा का सामान तथा दूसरे हाथ में घोड़े की लगाम। मूल मूर्ति खण्डित होने से वर्तमान में यह चूने से प्लास्टर युक्त है। इसके पीछे समवसरण है। इसमें तीन कतारों में संगमरमर के सुन्दर कारीगरी युक्त झूले, पालकी, आभूषणों की नक्काशी से सुशोभित 10 हाथी हैं। प्रत्येक हाथी के उपर महावत, उसके पीछे छत्रधर की दो–दो खड़ी मूर्तियाँ थीं किन्तु अब यह हाथी अधिकांशतः खण्डित अवस्था में हैं। इस हस्तीशाला का जीर्णोद्वार वर्ष 1991–92 में सम्पन्न हुआ।








लूणवसहि मंदिर

गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) के मंत्री वस्तुपाल एवं तेजपाल ने आबू के परमार राजा सोमसिंह की अनुमति लेकर विमलवसहि मंदिर के पास ही उसी के तादृश सफेद संगमरमर के पाषाणों से इस भव्य मंदिर का निर्माण कराया। वस्तुपाल एवं तेजपाल दोनों भाई थे। वस्तुपाल के लघु भ्राता तेजपाल तथा उनकी धर्मपत्नी अनुपमादेवी के पुत्र ''लावण्यसिंह'' के नाम पर यह लूणवसहि मंदिर कहलाता है।

इस मंदिर में 22वें जैन तीर्थंकर श्री नेमीनाथ भगवान की कसौटी के पत्थर की अत्यन्त ही रमणीय मूर्ति स्थापित है जिसकी प्रतिष्ठा जैन आचार्य श्री विजयसेन सूरि द्वारा वि.सं. 1287 ई. (सन् 1231 ई.) की चैत्र वदी 3 रविवार को सम्पन्न हुई। मंदिर का शिल्पकार ''शोभनदेव'' था। निर्माण में उस समय 13 करोड़ से भी अधिक रूपये की राशि व्यय हुई।

वि. सं. 1368 में मुसलमान बादशाह अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने इस मंदिर के मूल गंभारे और गूढ़–मण्डप को नष्ट कर दिया तथा कतिपय अन्य भागों को भी क्षति पहुंचाई जिसका जीर्णोद्धार व्यवसायी चंडसिंह के पुत्र ''पेथड़'' ने सं. 1378 में कराया



तथा श्री नेमीनाथ भगवान की यह श्यामवर्ण परिकर युक्त सुन्दर मूर्ति स्थापित की। अन्तिम जीर्णोद्धार तथा परिकमा में देहरी संख्या 23 से 30 तक की आठ नई देहरियों का निर्माण 1950 से 1965 तक सेठ श्री आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी ने कराया जिसका शिलालेख देहरी नं. 44 के दाहिनी तरफ लगा हुआ है।

दृश्य रचना : मंदिर के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही मंदिर का आकर्षक एवं भव्य स्वरूप दिखाई देता है। इस मंदिर की रचना विमलवसहि मंदिर के ही समान है। इसमें 52 देहरियां हैं तथा एक हस्तीशाला है। प्रत्येक देहरी में विभिन्न जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां स्थापित हैं। विमलवसहि मंदिर की ही भांति इस मंदिर की प्रत्येक देहरी के बाहर दो–दो गुम्बज हैं जिनकी छतों पर उत्कीर्ण नक्काशी अवलोकनीय है।

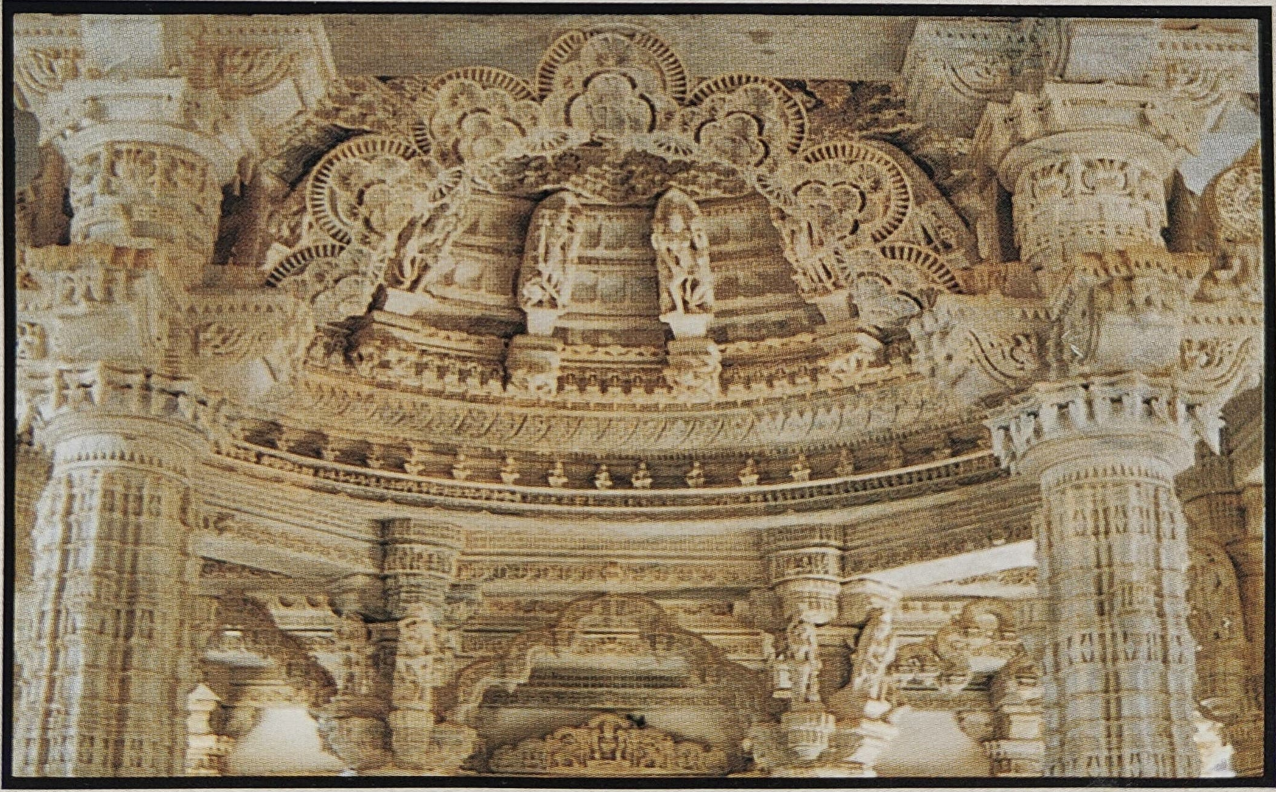
देहरी 1 : प्रथम देहरी के सामने पहली छत पर अम्बिका देवी की सुन्दर मूर्ति तथा दोनों ओर वृक्ष।

2–3 : पुष्प, नर्तकियाँ, हँस आदि के कलात्मक पट्ट।

4–5–6 : के मध्य के गुम्बज के कोनों में युगल नृत्य मूर्तियाँ अंकित हैं।

9 : द्वारिका नगरी और समवसरण का दृश्य। समुद्र में जलचर, नौकायें तथा जैन यात्रियों के संघ के साथ गिरनार पर्वत के जैन मंदिर का अंकन। हाथी, घोड़ा, पालकी, वाद्य–यंत्र बजाते कलाकर, पैदल सैनिक आदि का दृश्यांकन।

11 : गुंबज में सात पंक्तियाँ हैं। हाथी, घोड़े, नाटयकला। कृष्ण–जरासंध युद्ध। भगवान नेमीनाथ के जीवन–प्रसंग, विवाह, दीक्षा आदि। गवाक्ष में बैठी उनकी भावी पत्नी की आकृति।



14–15–16 : क्रमशः भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान शांतिनाथ के जीवन–पट्ट।

19 : कुन्थुनाथ स्वामी की मूर्ति तथा बाजू के ऊपरी खण्ड में मुनि सुव्रत स्वामी के जीवन से सम्बन्धित कथा पट्ट। नीचे खण्ड में वृक्ष के पास समुद्र का दृश्य जिसमें मछलियाँ, मगरमच्छ, कछुए, जहाज आदि अंकित हैं।

23–24–25–26 : नया निर्माण कार्य। देहरी संख्या 24 में राजुल देवी एवं नेमीनाथ, 25 में अम्बिका देवी और 26 में कुन्थुनाथ स्वामी की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

लूणवसहि की हस्तीशाला

हस्तीशाला में प्रवेश करते ही बांई ओर दो शिलालेख हैं जिनमें उस समय मंदिर की व्यवस्था का वर्णन है। इसमें श्वेत संगमरमर पत्थर के 10 हाथी हैं जिन पर सुन्दर नक्काशी युक्त रस्सियां, झूले, मालाओं आदि का सजीव उत्कीर्ण है।

इसमें मंदिर के निर्माता वस्तुपाल, तेजपाल और उनके स्वजनों, गुरू–आचार्य आदि की पाषाण प्रतिमायें हैं। हस्तीशाला के बीच के खण्ड में मूलनायक आदीश्वर भगवान की परिकर युक्त मूर्ति तथा इसके सामने ही नक्काशीयुक्त मेरू पर्वत की रचना है।

27–28–29–30 : नवीन निर्मित भाग।

33–34–35 : देहरियों में परिकर सहित विभिन्न तीर्थंकरों की सुन्दर मूर्तियां हैं।

36 : गुम्बज में वीणावादन करती सुन्दर मूर्ति।

43–44–45 : नया कार्य। देहरी क्रमांक 44 में भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों की तीन जैन चौबीसियों के 72 तीर्थंकरों का एक बड़ा पट्ट है। एक पट्ट पर 16वीं शती का माण्डवगढ़ निवासी ओसवाल श्राविका चम्पाबाई द्वारा बनवाने का उल्लेख है।

46–47–48–49 : के मध्य में गुम्बज की कलात्मकता अवलोकनीय है।

50 : इसके गुम्बज में सुन्दर गहरे जलाशय (बावड़ी) का कलात्मक पिण्ड विशेष रूप से आकर्षित करता है।

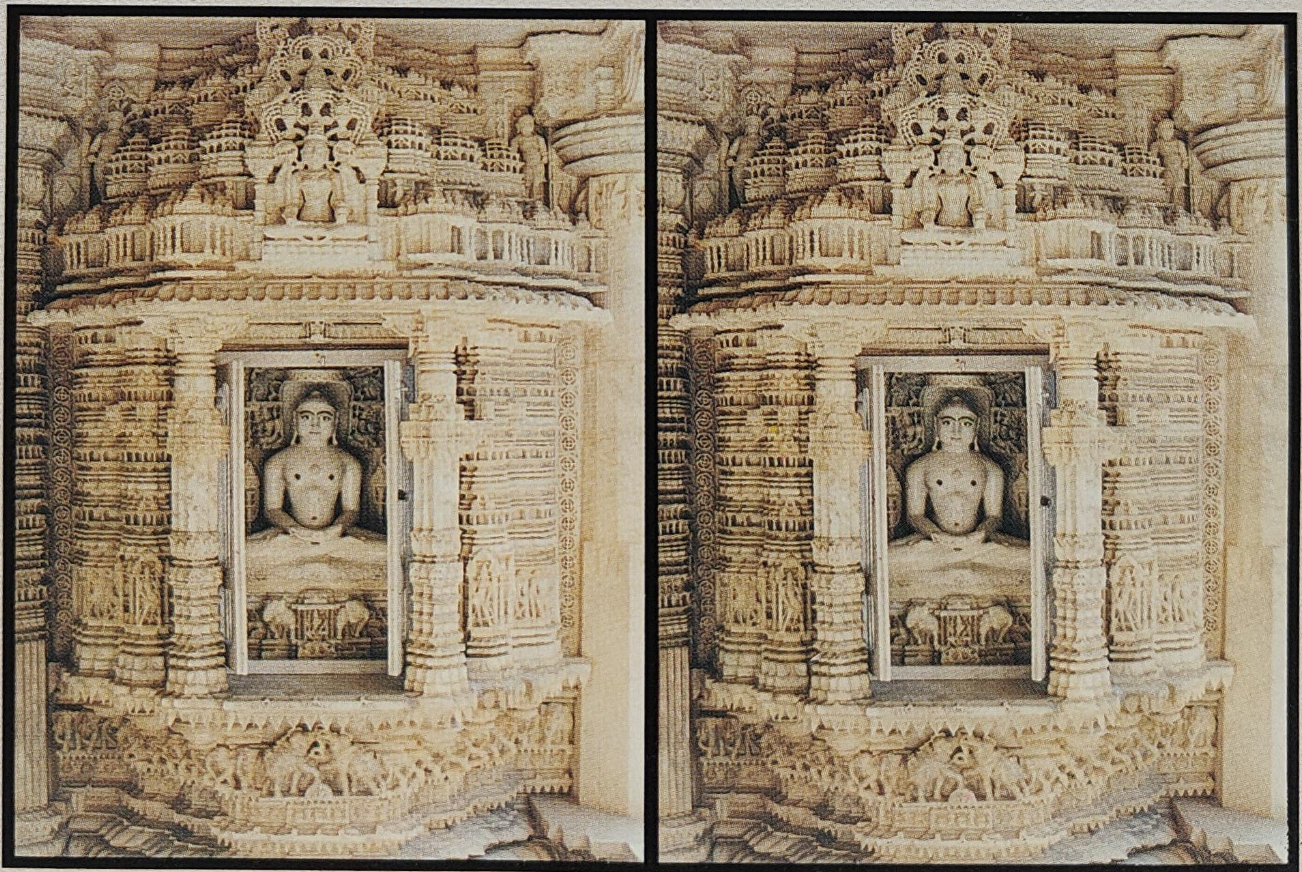
रंग–मंडप : मंदिर की परिक्रमा पूर्ण कर रंग–मंडप के बीच के बड़े गुम्बज में प्रवेश करते हैं। इस रंग–मंडप की कारीगरी, सुकोमलता, सुन्दरता तथा उत्कृष्टता विस्मयकारी है। मध्य में लटकता कलापूर्ण 'झूमका' स्फटिक बिन्दु सा प्रतीत होता है। शिल्पकला का यह अनुपम नमूना है।

विमलवसहि मंदिर की भांति इसके प्रत्येक स्तम्भ के सिरे पर भिन्न–भिन्न वाहनों पर अत्यन्त ही सुन्दर 16 विद्या देवियों की खड़ी मूर्तियाँ हैं। इन विद्या देवियों के नीचे एक–एक पंक्ति में तीन चौबीसियों अर्थात् 72 तीर्थंकरों की मूर्तियां, जैन साधुओं की 360 लघु आकृतियाँ गोलाकार मालाओं के रूप में अंकित हैं। रंग–मंडप के चारों ओर बने हुए तोरण इतने कलात्मक एवं चित्ताकर्षक हैं कि दर्शक अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता।

रंग मंडप के बीच वाले बड़े मण्डप के पहले दो कोनों में सुन्दर आकृति वाली इन्द्र की मूर्तियाँ हैं। दक्षिणी बाजू में दीवारों और छतों पर भगवान कृष्ण के जन्म का दृश्य–माता शयन अवस्था में, कारागृह, गोकुल में छाछ बिलोती हुई स्त्री, ग्वालबाल आदि अलौकिक नक्काशीयुक्त शिल्प कृतियां हैं।

दक्षिण–पश्चिम के कोने में भारतीय नाट्यकला का एक सुन्दरतम अद्वितीय दृश्य है जिसमें एक कमल पुष्प की पंखुड़ियों पर भिन्न–भिन्न प्रकार की मुद्राओं में 68 नर्तकियां चित्रित हैं।

नवचौकी : रंग–मण्डप के आगे सीढ़ियाँ चढ़ते ही ''नवचौकी'' है जिसकी 9 छतों में संगमरमर के पाषाणों पर एक से एक श्रेष्ठतर नक्काशी का सूक्ष्मतम, आश्चर्यजनक, अवर्णनीय शिल्प कार्य है। रंग–मण्डप एवं नवचौकी की कलात्मकता विश्व की अनुपम एवं अद्वितीय कृतियां हैं।



गूढ़ मण्डप द्वार के दाहिनी तथा बांई ओर नक्काशीवाले दो गोखड़े हैं जिनमें मीनाकारी के सदृश कोतरनी का अत्यन्त ही कमनीय कार्य है। ये गोखड़े मंत्री तेजपाल ने अपनी धर्मपत्नी सुहड़ादेवी के स्मरणार्थ बनवाये। बांई ओर के गोखड़े में भगवान आदिनाथ तथा दांई ओर गोखड़े में शान्तिनाथ भगवान की परिकरयुक्त प्रतिमाएं स्थापित हैं। नवचौकी के स्तम्भों पर नृत्यकला से परिपूर्ण आकृतियां हैं।

नवचौकी में एक तरफ तीन चौबीसियों का एक बड़ा पट्टा है जिसके एक कोने में लक्ष्मीदेवी की सुन्दर मूर्ति है। दाहिनी ओर तीसरे गुम्बज के चारों कोनों में दोनों तरफ हाथी सहित चार देवियों की सुन्दर आकृतियां हैं और चारों दिशाओं में प्रत्येक देवी के मध्य में 6–6 मूर्तियां हैं।

कुन्थुनाथ स्वामी का मन्दिर : लूणवसहि मंदिर से बाहर निकलने पर दांये हाथ की ओर कुन्थुनाथ स्वामी का दिगम्बर जैन मंदिर है।

कुम्भ स्तम्भ : लूणवसहि मंदिर देखकर सीढ़ियां उतरने पर बांयें हाथ की ओर काले पत्थर का एक उंचा स्तम्भ है जिसे मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने सन् 1449 ई. में बनवाया। कीर्ति स्तम्भ के नीचे एक सुरभी के पत्थर पर गाय–बछड़े का चित्र है और उसके नीचे कुम्भा का शिलालेख है।

दादा सा. की छतरी : पीतलहर मंदिर की ओर जाते हुए मार्ग के बांई ओर वृक्षों के मध्य जैन आचार्य श्री जिनदत्त सूरि जिन्हें ''दादा साहब'' भी कहते हैं, उनके पद चिन्हों की संगमरमर की छतरी बनी हुई है।



पीतलहर मंदिर

इस मंदिर को गुजरात के भीमाशाह ने बनाया था अतएव इसे ''भीमाशाह का मंदिर'' भी कहते है। मंदिर का निर्माण 1374 ई. से 1433 ई. के मध्य का माना जाता है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार गुजरात के मंत्री ''सुन्दर'' एवं ''गदा'' नामक व्यक्तियों ने करवाकर प्रथम जैन आचार्य ऋषभदेव भगवान की वर्तमान पंचधातु की मूर्ति सन् 1468 ई. में स्थापित की जिसकी प्रतिष्ठा आचार्य श्री लक्ष्मी सागर सूरि द्वारा सम्पन्न हुई। सूत्रधार मेवाड़ का शिल्पी ''देता'' था। मूलनायक की मूर्ति डूँगरपुर के कारीगरों द्वारा बनाई गई जिसका वजन 108 मन (लगभग 40 क्विंटल) है। परिकर एवं मूलनायक पर विस्तृत लेख वि. सं. 1525 फाल्गुन सुदी 7 शनिवार का है। परिकर 8 फुट उंचा 5 1/4 फुट चौड़ा है तथा मूलनायक की उंचाई 41 इंच है। पंचधातु की इस मूर्ति में पीतल की मात्रा अधिक होने से यह 'पीतलहर मंदिर' भी कहा जाता है।

गूढ़–मण्डप के बांई बाजू में श्वेत पाषाण की सुन्दर परिकर युक्त वाली बड़ी मूर्ति भगवान आदिनाथजी की वि.सं. 1525 में श्रावक ''सिन्हा'' और ''रत्ना'' ने बनवाई। दाहिनी बाजू में पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति है। मंदिर कार्य अधूरा होने से ये मूर्तियां स्थापित नहीं हो सकी।

नवचौकी की बांई तरफ में भगवान शान्तिनाथ की और दांई तरफ में श्री संभवनाथ भगवान की मूर्तियां स्थापित हैं।

इस मंदिर के दक्षिण की ओर 9वें जैन तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ का वि.सं. 1540 में निर्मित मंदिर तथा अन्य 20 देहरियां हैं जिनकी प्रतिष्ठा वि. सं. 1547 में हुई।



पार्श्वनाथ मंदिर

मंदिर के प्रवेश द्वार के बांई ओर तीन मंजिला चिंतामणी पार्श्वनाथ का चौमुखा मंदिर है। इस मंदिर को श्वेताम्बर जैनियों के खरतरगच्छ समुदाय के अनुयायी दरड़ा गोत्रीय ओसवाल संघवी ''मंडलिक'' तथा उसके कुटुम्बियों ने बनवाया था अतएव इसे ''खरतरवसहि'' मंदिर कहा जाता है। इस मंदिर की तीनों मंजिलों की चारों दिशाओं में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमायें स्थापित हैं इस कारण इसे ''चौमुखा पार्श्वनाथ मंदिर'' भी कहते हैं। इस मंदिर की प्रतिष्ठा श्री जिनचन्द्र सूरि द्वारा संवत् 1515 (सन् 1458 ई.) में आषाढ़वदी 1 शुक्रवार को सम्पन्न हुई।

इसे ''कारीगरों (सिलावटों) का मंदिर'' तथा यह कहना कि इस मंदिर को कारीगरों ने अन्य मंदिरों के बचे हुए सामान से बिना पारिश्रमिक लिए बनाया, निराधार है। यह मंदिर विमलवसिह के निर्माण के लगभग 425 वर्ष पश्चात् तथा लूणवसहि के निर्माण के 225 वर्ष बाद बना और इस मंदिर में प्रयुक्त पत्थर भी उक्त दोनों मंदिरों के पत्थरों से बिल्कुल भिन्न है। इस मंदिर में कई शिलालेख विभिन्न खण्डों पर लगी प्रतिमाओं पर विद्यमान है जो इस मंदिर का निर्माण ''मंडलिक'' द्वारा किए जाने को प्रमाणित करते हैं।

यह मंदिर सादा परन्तु विशाल है। मंदिर के चारों ओर मूलनायक श्री पार्श्वनाथ की श्वेत संगमरमर की प्रतिमायें एवं चारों परिकर अत्यन्त ही कलात्मक हैं। मंदिर के चारों ओर बड़े–बड़े रंग–मण्डप हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों पर दिकपालों, यक्षिणियों, सालभंजिकाओं और स्त्रियों की श्रृंगारिक शिल्प–कृतियां भाव–अभिव्यक्ति की दृष्टि से आकर्षक हैं।





पुस्तक सामग्री मुनि श्री जयन्त विजयी जी द्वारा रचित पुस्तक ''आबू'' पर आधारित ।

प्रकाशक : शेठ कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी सिरोही (राजस्थान)

मुद्रण व्यवस्था : अरावली ऑफसेट, सानी गांव, आबू पर्वत (राज.) फोन – 238322

छायाचित्र : तरूण सिंह, फोटो फास्ट कलर लेब, आबू पर्वत

डिजाईन : नौशाद, आबू पर्वत

